

20 अक्तूबर, 2019 को विज्ञान भवन में अखिल भारतीय रैगर महासभा द्वारा आयोजित 'स्मारिका
विमोचन समारोह'

अक्तूबर, 2019

विज्ञान भवन, नई दिल्ली

आज अखिल भारतीय रैगर महासभा के छठे सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन किया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित भव्य समारोह में आना मेरे लिए बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है। इस मंच के जरिये आप सभी से मिलने और बातचीत करने का अवसर देने के लिए मैं आयोजकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

साथियो, रैगर समाज हमेशा से ही प्रगतिशील विचारधारा का पोषक रहा है। इस समाज का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। इस समाज के लोगों की देशभक्ति, सामाजिक जागरूकता, और राजनीतिक चेतना उल्लेखनीय रही है। रैगर समाज के लोगों ने देश की आजादी के आंदोलन में स्वतंत्र सेनानियों के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है।

साथियो, हम सब के जीवन में कई प्रकार की चुनौतियां और समस्याएं आती रहती हैं। पर उनसे लड़कर आगे बढ़ने वाले ही जीवन संग्राम में विजयी होते हैं।

रैगर समाज का भी अपना एक लंबा इतिहास रहा है। इस समाज ने कई तरह की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और चुनौतियों का सामना किया है। पर इस समाज ने कभी हार नहीं मानी। इसने निरन्तर परिस्थितियों से संघर्ष करके हमेशा अपने सिद्धांतों और स्वाभिमान को जिंदा रखा है। और अपनी विकास-यात्रा को आगे बढ़ाया है। यही एक सुलझे हुए परिपक्व समाज की पहचान है।

साथियो, रैगर जाति के लोग भारतवर्ष के काफी विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। वे मध्य- प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र के अलावा मुख्यतः राजस्थान और दिल्ली में रहते हैं। दिल्ली के करोल बाग में तो रैगरपुरा नाम का एक मोहल्ला आज भी इस समाज के नाम से विद्यमान है। इस समाज के कुछ लोग मारवाड़ अर्थात् जोधपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में भी रहते हैं। यहां इस जाति के लोगों को जटिया भी कहा जाता है। जोधपुर नगर में नागोरी गेट के पास जटिया कॉलोनी अभी भी मौजूद है।

मित्रो, रैगर समुदाय मूलतः सूर्यवंशी क्षत्रिय वर्ग से आते हैं। पतितपावनी माँ गंगा की उपासना उन्हें विरासत में मिली है। वैदिक काल के अध्ययन और राजा सागर की वंशावली से यह सिद्ध भी हो चुका है। इस प्रकार रैगरों की उत्पत्ति क्षत्रियों से हुई है तथा रैगर सागर वंशी क्षत्रिय हैं। इस समाज से हजारों ऐसे वीर हुए हैं जिन्होंने युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की।

साथियो, साहस और वीरता इस समाज के लोगों का स्वाभाविक गुण रहा है। इन्हीं गुणों का परिचय देते हुए सन् 1946 में रैगर समाज ने अपनी देशभक्ति से प्रेरित होकर प्रस्ताव किया था कि हिंदुस्तान का बंटवारा नहीं होना चाहिए। रैगर समाज भारतवर्ष की एकता और अखंडता का प्रबल समर्थन करता रहा है।

इस संदर्भ में रैगर समाज के कई लोगों ने देश की आजादी की लड़ाई में निडर और वीर सेनानियों के रूप में अपनी अहम भूमिका निभायी है। ऐसे लोगों में श्री सूर्यमल मौर्य जी, श्री जयचंद मोहिल जी, श्री परशुराम बाकोलिया जी, श्री राम भगत जी, श्री मूलचंद मोदी जी, श्री नवल प्रभाकर जाजोरिया जी, डॉ. खूब राम जाजोरिया जी जैसे लोग प्रमुख हैं।

साथियो, हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और मानव सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। सेवा हमारे मन, मस्तिष्क और आत्मा को शुद्ध और पवित्र बनाती है।

इस संदर्भ में, मैं अखिल भारतीय रैगर महासभा की सराहना करना चाहूंगा जो समाज के उत्थान के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रही है। रैगर समाज में समाज सेवा को हमेशा ही महत्व दिया गया है। इस समाज ने राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में बिना किसी स्वार्थ के उल्लेखनीय योगदान दिया है।

रैगर समाज में हेमाजी उजिपुरिया तथा वेणाजी कुंवरिया जैसे दानी हुए हैं जिन्होंने भीषण अकाल में गरीबों की मदद करके हजारों लोगों की जानें बचाईं। रैगर समाज में नानकजी जाटोलिया जैसे भामाशाह हुए हैं, जिन्होंने मुगलों के खिलाफ लड़ने के लिए जोधपुर दरबार के अजीत सिंह जी को सोने की मोहरें तथा 80,000 रुपये दिए। वहीं बद्री बाकोलिया जी ने विश्वविख्यात पुष्करराज राज्य में प्रसिद्ध गऊघाट बनवाया।

साथियों, यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय रैगर महासभा, रैगर समाज की सर्वोच्च संस्था है। इसकी स्थापना, रैगर समाज के प्रथम महासम्मेलन के दौरान दौसा में सन् 1944 में स्वामी ज्ञानस्वरूप महाराज द्वारा की गई थी।

1944 में स्थापना के बाद से ही इस महासभा ने सामाजिक न्याय की चेतना, एकता और भाईचारे की भावना के प्रचार-प्रसार में सराहनीय योगदान दिया है। रैगर समाज ने हमेशा से ही प्रगतिशीलता और सामाजिक न्याय की भावना को अपनाया है। इस महासभा ने सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ हमेशा ही संघर्ष किया है।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि रैगर समाज ने बाल विवाह, दहेज-प्रथा, मृत्यु भोज, आदि जैसी कई कुरीतियों के विरुद्ध सामाजिक कार्रवाई के लिए जनता को संगठित किया है। इन कार्यों को मैं सामाजिक यज्ञ कहना चाहूंगा। इस प्रकार से काम करके समाज ने अन्य वर्गों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हो रही है कि इस महासभा ने इससे पहले पांच राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए हैं और समसामयिक एवम सामाजिक मुद्दों पर कई प्रासंगिक संकल्प पारित किए हैं। यह वास्तव में प्रशंसनीय है।

साथियो, शिक्षा ही मनुष्य के विकास की कुंजी है। शिक्षा ही हमें सही और गलत, अच्छे और बुरे, के बीच फर्क करना सिखाती है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। रैगर समाज ने भी शिक्षा के महत्व को समझा है।

इस समाज ने महिलाओं को सशक्त करने, सदाचारी और समावेशी समाज के निर्माण के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर हमेशा ही बल दिया है। इसने शिक्षा के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाकर सुधारवादी सामाजिक परिवर्तन लाने में उत्साह दिखाया है।

साथियो, पूजनीय स्वामी आत्माराम जी का भी सपना था कि समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हर शहर में एक छात्रावास का निर्माण किया जाना चाहिए। उनके इस सपने को साकार करने के लिए यह महासभा विशेष रूप से छात्रावासों और शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण करवाती है। ऐसा करके यह महासभा व्यापक और बहुमुखी विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

किन्तु अभी भी हमारे देश में कई ऐसे लोग हैं जो शिक्षा के प्रकाश से दूर हैं। इसलिए हमें ऐसे लोगों को भी शिक्षा से जोड़ने के लिए युद्धस्तर पर निरन्तर प्रयास करने होंगे।

साथियो, विविधता में एकता भारत की सबसे बड़ी ताकत है। हमारे यहां कई भाषाएं हैं, कई वेश-भूषाएं हैं, कई जीवनशैलियां हैं, कई जातियां, कई धर्म हैं। पर इनके बावजूद हम एकता के अटूट बन्धन में बंधे हुए हैं। हम सबकी मातृभूमि एक है। हमारा अतीत एक है। हमारा वर्तमान और भविष्य भी एक है। हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता हमारी ताकत है। यह विविधता ही हमारी सभ्यता को समावेशी और प्रगतिशील बनाती है।

साथियो, अपनी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और अन्य उपलब्धियों के कारण प्राचीन काल से भारत को जगद्गुरु माना जाता रहा है। इसके कारण विश्वभर के देशों ने हमारे देश में गहरी रुचि ली है और हमारी प्रशंसा भी की है।

आज फिर से हम विश्वगुरु बनने की राह पर चल रहे हैं। इसी सपने को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'नए भारत' के निर्माण का आह्वान किया है। डिजिटल इंडिया (Digital India) से हम डिजिटल क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं। प्रौद्योगिकी (Technology) के जरिये हम चाँद तक पहुंच गए हैं। Skill India से युवाओं को कुशल बनाया जा रहा है। आज भारतवर्ष विकास के पथ पर बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। हम सबका यह राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम सब अपने अपने तरीके से इस विकास यात्रा के भागीदार बनें। मुझे विश्वास है कि रैगर समाज हमेशा की तरह आगे भी देश के उत्थान और विकास में सक्रिय योगदान करता रहेगा।

मित्रो, स्मारिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्य है। स्मृति मनुष्य की सबसे अनमोल धरोहर है। हमारे इतिहास और हमारी स्मृति से ही हमारी पहचान होती है। हमें वर्तमान में जीने और भविष्य को बेहतर बनाने के लिए अपने अतीत को याद रखना आवश्यक है। किसी भी देश और समाज के उत्थान के लिए इतिहास का ज्ञान बहुत जरूरी है।

हमें किसी भी समाज या देश के कला-साहित्य और संस्कृति की जानकारी उसके इतिहास और परंपरा से प्राप्त होती है जो पीढ़ी दर पीढ़ी समाज के साथ चलती है। इसलिए अपने अतीत को सहेजना और आगे बढ़ाना बहुत जरूरी है। स्मारिका का प्रकाशन इस दिशा में एक जरूरी कार्य है। इसके लिए मैं सम्पूर्ण रैगर समाज को बधाई देता हूँ। मुझे खुशी है कि आप सब अपनी स्मृतियों को सहेजने के लिए निरन्तर तत्पर हैं।

अंत में, मैं सारे रैगर समाज को और विशेष रूप से श्री भंवर लाल खटनावलिया और उन सभी को बधाई देता हूँ जो छठे राष्ट्रीय रैगर महासम्मेलन से जुड़े हैं। मैं समाज के सभी समुदायों और वर्गों को प्रोत्साहित करने और अच्छे काम की प्रतिबद्धता के लिए श्री योगेन्द्र चंदोलिया जी को भी बधाई देता हूँ। मैं अखिल भारतीय रैगर महासभा द्वारा किए जा रहे सभी नेक कार्यों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह समाज अपनी संस्कृति को सहेजते हुए यूं ही आगे बढ़ता रहेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको अपार शक्ति दें ताकि आप जन सेवा और देश सेवा के कार्य इसी प्रकार करते रहें।

.....